International Journal in Management and Social Science
Volume 13 Issue 12, Dec 2025 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

वैश्विक संकट और राजनीति का भविष्य : हेरोल्ड लॉस्की के विचारों का बौद्धिक मूल्यांकन

अरीबा किरमानी
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग
आर.एम.पी. (पी.जी.) कॉलेज, सीतापुर
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ॰ सचिन पाठक
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
आर.एम.पी. (पी.जी.) कॉलेज, सीतापुर
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारांश

हेरोल्ड लॉस्की (1893–1950) बीसवीं सदी के प्रमुख राजनीतिक चिंतकों में से एक के रूप में उभरते हैं, जिनके सिद्धांतों ने बहुलतावाद, समाजवाद और अंतर्राष्ट्रीयतावाद को वैचारिक रूप से जोड़ते हुए वैश्विक राजनीति को नए आयाम प्रदान किए। दो विश्व युद्धों और व्यापक आर्थिक संकटों से व्याप्त उथल–पुथल के दौर में लॉस्की के विचार राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र में एक निर्णायक हस्तक्षेप के रूप में सामने आए। यह शोध–पत्र लॉस्की की बौद्धिक यात्रा का पुनर्परीक्षण करता है उनके प्रारंभिक बहुलवादी दृष्टिकोण, जिसमें उन्होंने पूर्ण राज्य–संप्रभुता को अस्वीकार किया, से लेकर उनके बाद के उस दृष्टिकोण तक, जिसमें उन्होंने विश्व शांति और मानवीय समानता के लिए समाजवादी अंतर्राष्ट्रीयतावाद को अनिवार्य शर्त के रूप में प्रतिपादित किया।

लॉस्की की रचनाओं और जीवन प्रसंग के संदर्भ में यह अध्ययन यह विश्लेषण करता है कि उनकी विचारधारा किस प्रकार अंतरयुद्ध काल में लीग ऑफ नेशंस के प्रति गहराते मोह भंग और फांसीवाद के बढ़ते प्रभाव के प्रतिरोध में परिवर्तित होती गई। समकालीन विद्वानों के दृष्टिकोणों को सम्मिलित करते हुए, यह शोध उजागर करता है कि लॉस्की ने पूंजीवादी साम्राज्यवाद पर जो आलोचनाएँ प्रस्तुत कीं वे अपने समय से कहीं अधिक दूरदर्शी थीं, तथा राष्ट्रीय सीमाओं से परे एक विकेन्द्रित, न्यायपूर्ण और सहयोगमूलक वैश्विक व्यवस्था की उनकी परिकल्पना आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। यद्यपि उन्होंने राल्फ मिलिबैंड जैसे प्रभावशाली चिंतकों को गहराई से प्रभावित किया, फिर भी प्रत्यक्षवाद–प्रधान

अकादमिक पद्धति के प्रभुत्व के कारण लॉस्की के योगदान को अक्सर हाशिये पर रखा गया है। यह अध्ययन तर्क प्रस्तुत करता है कि वैश्वीकरण, आर्थिक असमानता और अतिराष्ट्रीय शासन की वर्तमान बहसों में लॉस्की की प्रासंगिकता पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई है और राजनीतिक दर्शन के उनके मानकवादी दृष्टिकोण के पुनरुत्थान की आवश्यकता है।

यह शोध–पत्र हेरोल्ड लॉस्की को केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे राजनीतिक सिद्धांतकार के रूप में स्थापित करता है जिनके प्रश्न सत्ता, लोकतंत्र और वैश्विक संकट की प्रकृति आज भी उतने ही तात्कालिक और विचारोत्तेजक हैं।

कीवर्ड्सः हेरोल्ड लॉस्की, बहुलतावाद, संप्रभुता, समाजवाद, अंतरराष्ट्रीयतावाद, वैश्विक संकट

परिचय

बीसवीं सदी का प्रारंभ तीव्र वैचारिक संघर्षों और ऐतिहासिक उथल–पुथल से परिपूर्ण था। प्रथम विश्व युद्ध की भयावह तबाही, बोल्शेविक क्रांति की प्रति ध्वनि, लीग ऑफ नेशंस की सीमित प्रभावशीलता और विश्वव्यापी आर्थिक अस्थिरता ने राजनीतिक विचारधारा के क्षितिज को लगातार चुनौती दी। इसी परिवेश में हारॉल्ड जोसेफ लॉस्की एक प्रखर राजनीतिक चिंतक के रूप में स्थापित हुए, जिनकी वैचारिक यात्रा घरेलू राजनीति, विधि सिद्धांत और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों के निर्णायक विमर्शों तक फैली हुई थी। मैनचेस्टर (इंग्लैंड) में एक सम्पन्न यहूदी परिवार में जन्मे लॉस्कीने उदारवादी पृष्ठभूमि को त्यागते हुए पहले गिल्ड समाजवाद, फिर बहुलतावाद और अंततः संशोधित मार्क्सवादी विचारधारा का समर्थन किया। हार्वर्ड विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (LSE) में उनका विशिष्ट शैक्षणिक योगदान उन्हें एंग्लो–अमेरिकी बौद्धिक परंपरा के केंद्र में स्थापित करता है, जहाँ उन्होंने विद्वानों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की पीढ़ियों को प्रभावित किया। जॉन मेनार्ड कीन्स और ई.एच. कार जैसे समकालीनों की तुलना में लॉस्की का दृष्टिकोण विशिष्ट था– क्योंकि उन्होंने राज्य–संप्रभुता के आलोचनात्मक विश्लेषण को पूंजीवाद की

शक्ति–गतिकी के साथ संयोजित करते हुए यह प्रतिपादित किया कि वास्तविक अंतरराष्ट्रीय सहयोग तभी संभव है, जब बाजार–चालित राष्ट्रवाद की सीमाओं को पार किया जाए।

आज के दौर में भी लॉस्की की प्रासंगिकता निर्विवाद है, विशेषकर ऐसे समय में जब लोकलुभावन राजनीति पुनः उभार पर है, जलवायु परिवर्तन के कारण अंतर–निर्भरता अनिवार्य हो गई है और संयुक्त राष्ट्र जैसी बहुपक्षीय संस्थाएँ गंभीर प्रश्नों का सामना कर रही हैं। एक "नए विश्व" की प्रारंभिक आशावादी कल्पना से आगे बढ़ते हुए लॉस्की अंततः इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पूंजीवादी व्यवस्था युद्ध और सामाजिक असमानता को संरचनात्मक रूप से उत्पन्न करती है। यह शोध–पत्र लॉस्की के वैचारिक विकास को जीवन–परिप्रेक्ष्य के आधार पर पुनर्निर्मित करता है– उनकी बहुलतावादी नींव, अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ संलग्नता और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उत्पन्न बौद्धिक निराशावाद तक। पूर्व प्रचलित व्याख्याओं की पुनरावृत्ति से बचते हुए, यह अध्ययन उनके विचारों को समाकलित रूप में प्रस्तुत करता है– यह दर्शाने के उद्देश्य से कि लॉस्की के तर्कों ने न केवल वैश्वीकरण सिद्धांतों का पूर्वानुमान किया, बल्कि वेस्टफेलियाई अराजकता के विकल्प के रूप में समाजवादी अंतरराष्ट्रीयतावाद की संकल्पना भी प्रस्तुत की।

यह अध्ययन ऐतिहासिक–संकल्पनात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें लॉस्की के प्रमुख ग्रंथों– A Grammar of Politics (1925) तथा Reflections on the Revolution of Our Time (1943) के साथ तुलनात्मक द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करते हुए उनके वैचारिक रूपांतरण को क्रमबद्ध रूप से समझाया गया है। शोध–पत्र की संरचना क्रमशः आरंभिक अकादमिक प्रभाव, बहुलतावादी आलोचना, अंतरयुद्ध काल में वैचारिक उग्रता, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उनका वैश्विक दृष्टिकोण और अंततः बौद्धिक विरासत के रूप में व्यवस्थित है। यह ढाँचा न केवल लॉस्की की विचार यात्रा को रेखांकित करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि व्यक्तिगत वैचारिक प्रतिबद्धताएँ और वैश्विक राजनीतिक घटनाएँ परस्पर किस प्रकार एक–दूसरे को आकार देती हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में, जब संप्रभुता निरंतर रूप से अतिराष्ट्रीय चुनौतियों से टकरा रही है, लॉस्की का यह आग्रह कि लोकतांत्रिक भविष्य के लिए आर्थिक शक्ति सम्बन्धों का पुनर्गठन आवश्यक है, अत्यंत सामयिक प्रतीत होता है। जैसा कि एक विद्वान ने कहा है,

लॉस्की की सोच "उदारवादी आदर्शों और समाजवादी अनिवार्यताओं के बीच अनिर्णीत तनाव" को मूर्त रूप देती है एक ऐसा द्वंद्व जो उनके जीवनकाल में निराकृत नहीं हो पाया, परन्तु आज की विश्व–राजनीति में निर्णायक रूप से उपस्थित है। अतः यह शोध–पत्र लॉस्की को अतीत का विचारक भर नहीं मानता, बल्कि वैश्विक संकटों के दौर में दिशा देने वाले राजनीतिक सिद्धांतकार के रूप में पुर्नस्थापित करता है।

प्रारंभिक जीवन और बौद्धिक गठन

हेरोल्ड लॉस्की के विकासशील वर्ष एडवर्डियन ब्रिटेन की गहन सामाजिक–राजनीतिक हलचलों को प्रतिबिम्बित करते हैं जहाँ औद्योगिक समृद्धि के पीछे गहराती वर्ग–विभाजन तथा साम्राज्यवादी असुरक्षाएँ छिपी हुई थीं। 30 जून 1893 को मैनचेस्टर में नाथन और सारा लॉस्की के घर जन्मे हारॉल्ड ऐसे यहूदी उदारवादी वातावरण में पले–बढ़े, जिसमें पिता लेस व्यापार से जुड़े और स्थानीय सिनागॉग के नेतृत्व में श्रम करते थे, जबकि माता घरेलू भूमिका में शिक्षा और सामाजिक सुधार के मूल्यों को पोषित करती थीं। पिता के मुक्त व्यापार–आधारित उदारवाद और पुत्र के तेजी से उभरते कट्टर राजनीतिक विचारों में प्रारम्भ से ही विरोध देखा गया। मैनचेस्टर ग्रामर स्कूल में प्रगतिशील प्रधानाचार्य जॉन लुईस पैटन के नेतृत्व में लॉस्की को ऐसी शिक्षा मिली, जिसने समानतावादी मूल्यों और गिल्ड समाजवाद की ओर उन्हें आकर्षित किया। श्रमिक स्व–प्रबन्धन तथा पूँजीवादी पदानुक्रम के प्रतिरोध पर आधारित इन विचारों ने लॉस्की पर गहरा प्रभाव डाला। पैटन के बौद्धिक प्रभाव के परिणामस्वरूप लॉस्की ने धार्मिक रूढ़िवाद को भी चुनौती दी, और तर्कसंगतता तथा आस्था के बीच असंगति का हवाला देते हुए 1910 में यहूदी धर्म का परित्याग कर दिया। यह निर्णय पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव का कारण बना और लॉस्कीके जीवनभर जारी रहने वाले वैचारिक विद्रोह के प्रथम संकेत के रूप में उभरा।

1911 में अठारह वर्ष की आयु में लॉस्की ने न्यू कॉलेज, ऑक्सफोर्ड में प्रवेश लिया। प्रारम्भ में शरीर विज्ञान का अध्ययन करने का निर्णय असफल साबित हुआ, जिसके पश्चात उन्होंने आधुनिक इतिहास का अध्ययन चुना और 1914 में प्रथम श्रेणी उपाधि प्राप्त की। ऑक्सफोर्ड के सक्रिय समाजवादी समूह जिनमें एस.जी. हॉब्सन के नेतृत्व में गिल्ड आंदोलन तथा पैनखर्स्ट परिवार के मताधिकार अभियान शामिल थे – ने लॉस्की की विचारधारा को

और अधिक उग्र बनाया। इसी अवधि में उन्होंने डेली हेराल्ड के लिए संपादकीय लेख लिखे और वैचारिक आलोचना तथा वाद–विवाद की शैली को निखारा। 1914 में फ्रीडा केरी जो उनसे नौ वर्ष वरिष्ठ और ईसाई मताधिकार आंदोलन की कार्यकर्ता थीं, से विवाह ने पहले से तनावग्रस्त पारिवारिक सम्बन्धों को और अधिक चुनौती दी। यह विवाह लॉस्की की नारीवादी और धर्मनिरपेक्ष प्रगतिवाद के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक था जो बाद में उनके राजनीतिक सिद्धांत में लैंगिक समानता की वकालत के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है।

प्रथम विश्व युद्ध ने उनके करियर की दिशा बदल दी। स्वास्थ्य कारणों से सेना में शामिल नहीं हो सके, अतः 1914 में उन्होंने मॉन्ट्रियल स्थित मैकगिल विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति स्वीकार की। वहीं, कनाडाई अलगाववाद के परिवेश में उन्होंने अंग्रेजी बहुलतावादी विचारकों एफ.डब्ल्यू. मेटलैंड और जे.एन. फिगिस से अत्यधिक प्रेरणा प्राप्त की। इन चिंतकों के अनुसार समाज अनेक स्वैच्छिक संघों जैसे गिल्ड, चर्च और श्रमिक संघ से निर्मित एक बहुस्तरीय इकाई है, न कि केवल राज्य द्वारा परिभाषित एकीकृत सत्ता। लॉस्की के 1917 के ग्रंथ Studies in the Problem of Sovereignty में इस ″बहुलतावादी सिद्धांत″ को विस्तार देते हुए उन्होंने कहा कि संप्रभुता महज एक ″कल्पना″ है, जिसका उपयोग शासक वर्ग अपनी सत्ता को वैध ठहराने के लिए करता है। इसी काल में अमेरिकी दार्शनिक जॉन डेवी से पत्राचार ने उन्हें प्रयोगवादी और व्यावहारिक दृष्टिकोण ग्रहण करने में सहायक भूमिका निभाई, तथा बहुलतावाद को ″निरंतर प्रयोगशील″ व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया।

अटलांटिक पार बौद्धिक नेटवर्क ने लॉस्की के प्रभाव को और विस्तारित किया। 1916 में हार्वर्ड के विधि प्राध्यापक फेलिक्स फ्रैंकफर्टर ने उन्हें अतिथि व्याख्याता के रूप में आमंत्रित किया। फ्रैंकफर्टर का मार्गदर्शन और सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश ऑलिवर वेंडेल होम्स जूनियर के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता ने अमेरिकी प्रगतिवाद, रूढ़िवादी न्यायशास्त्र और समाजवादी आलोचना के स्वर को उनके चिंतन में समाहित किया। होम्स अक्सर उन्हें मजाक में ‘‘छोटा समाजवादी’’ कहते थे, किंतु कई वर्षों तक चलने वाली उनकी पत्राचार–परम्परा ने लॉस्की की अमेरिकी लोकतंत्र पर सूक्ष्म आलोचना को आकार दिया एक ऐसी व्यवस्था, जो तानाशाही के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान तो करती है परंतु कॉर्पोरेट शक्ति

के अधीन भी है। 1919 में बोस्टन पुलिस हड़ताल के समर्थन में खड़े होने के कारण लॉस्की और हार्वर्ड प्रशासन के बीच तीव्र विवाद उत्पन्न हुआ, जिसके चलते बढ़ते विरोध के दबाव में लॉस्की ने 1920 में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (सैम्) में नियुक्ति स्वीकार कर ब्रिटेन वापसी की और फेबीअन समाजवाद से गहरा जुड़ाव स्थापित किया।

इस अवधि ने लॉस्की के प्रारम्भिक विचारों को सुदृढ़ रूप दिया। उनके अनुसार संप्रभुता की अवधारणा ''राष्ट्रीय एकता'' को बढ़ावा देने के नाम पर शक्तिशाली समूहों के हितों को वैध ठहराती है और समाज में वास्तविक शक्ति—असमानताओं को छिपाती है। उनके प्रस्तावित मॉडल में क्षेत्रीय परिषदें, श्रमिक महासंघ और अन्य कार्यात्मक समूह अधिकाधिक राजनैतिक अधिकार का प्रयोग करें, जिससे ''विकेंद्रीकृत संघवाद'' को आधार मिले। हालांकि उनका बहुलतावाद अराजकतावाद नहीं था; वह औद्योगिक अव्यवस्था के बीच नैतिक समन्वय की तलाश करता था। 1921 के निबंध—संग्रह The Foundations of Sovereignty and Other Essays ने इन विचारों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया और मेटलैंड के ऐतिहासिक विश्लेषण तथा डेवी के प्रयोगवादी दर्शन का उत्कृष्ट संयोजन माना गया। इसी काल में अमेरिका में बिताए समय ने लॉस्की को साम्राज्यवाद के नस्लीय आयामों के प्रति भी संवेदनशील बनाया, उन्होंने लैटिन अमेरिका में अमेरिकी हस्तक्षेपों को यूरोपीय उपनिवेशवाद के विस्तार के रूप में देखा, जो आगे चलकर निर्भरता सिद्धांतों की दिशा में संकेतक साबित हुआ।

1920 के मध्य तक ब्रिटेन में बढ़ते राजनीतिक जुड़ाव ने लॉस्की के बहुलतावाद को व्यवहारिक रूप से संशोधित किया। लेबर पार्टी और फेबीअनों के सक्रिय सदस्य के रूप में उन्होंने अबेरिस्ट्विथ विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों के प्रथम प्राध्यापक अल्फ्रेड जिमर्न के साथ कार्य किया। जिमर्न का विश्व नागरिक दृष्टिकोण लॉस्की को आकर्षित करता था, हालांकि लॉस्की लीग ऑफ नेशंस को ''सामाजिक उपचार के रूप में प्रस्तुत दिखावटी उपाय'' मानते थे, जो अंततः निराशा उत्पन्न करेगा। इन विचार—वार्ताओं ने अंतर निर्भरता के प्रति लॉस्की के विश्वास को मजबूत किया, विज्ञान और वैश्विक व्यापार की प्रगति ने राष्ट्र—राज्यों को अप्रचलित बना दिया था, और ''अंतरराष्ट्रीय शासन के माध्यम से सामूहिक सहमति'' अब अनिवार्य थी। किन्तु इसी उत्साह के भीतर अंतर्विरोध भी छिपे

थे हिंसक क्रांति के प्रति भय और बढ़ती मार्क्सवादी सहानुभूति के बीच लॉस्की निरंतर वैचारिक द्वंद्व से जूझते रहे।

अपने प्रारम्भिक चरण में विकसित बहुलतावाद के माध्यम से लॉस्की ने हॉब्सियन सर्वसत्तावाद के विरुद्ध एक लोकतांत्रिक विकल्प प्रस्तुत किया, जो स्वीकृति, सहभागिता और निरन्तर प्रयोग पर आधारित था। आज के संदर्भ में, उनके विचार नागरिक समाज द्वारा राज्य की अति–सत्ता पर नियंत्रण की आधुनिक विचारधाराओं के अनुरूप प्रतीत होते हैं। साथ ही, कुछ विद्वानों के अनुसार लॉस्की की यह संवेदनशीलता उनके यहूदी मूल और जीवन में झेले गए भेदभाव के अनुभवों से भी पोषित थी, उनके लिए बहुलतावाद कोई सैद्धांतिक विकल्प नहीं, बल्कि सर्वसत्तावाद के विरुद्ध सुरक्षा कवच था। ऑक्सफोर्ड के युवा क्रांतिकारी से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभावकारी बौद्धिक व्यक्तित्व बनने तक की यह यात्रा उनके आगे आने वाले वैश्विक संकटों पर केंद्रित चिंतन की नींव बन गई।

बहुलतावाद और संप्रभुता की आलोचना

लॉस्की का बहुलतावादी (Pluralist) चरण, विशेष रूप से 1910–1920 के दशक में, वेस्टफेलियन व्यवस्था की उस अवधारणा पर सीधा प्रहार था, जो राज्य को पूर्ण और सर्वोच्च संप्रभुता वाला मानती है। फिगिस की पुस्तक Churches in the Modern State (1913) से प्रभावित होकर, लॉस्की राज्य को सर्वशक्तिमान लेविथान नहीं मानते, बल्कि समाज के अनेक संगठनों में से एक संगठन के रूप में देखते हैं, जिसकी सत्ता उपयोगिता पर निर्भर होनी चाहिए, न कि जन्मजात अधिकार पर। अपनी पुस्तक Studies in the Problem of Sovereignty में उन्होंने संप्रभुता की अवधारणा को एक ‘‘कानूनी कल्पना’’ बताकर विखंडित किया, जो विविध निष्ठाओं जातीय, व्यावसायिक, वैचारिक को दबाकर शासक वर्ग के प्रभुत्व को वैध बनाती है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद की यूरोप की परिस्थिति में यह आलोचना विशेष रूप से गूंजी, जहाँ वर्साय की संधि के तहत खींची गई नई सीमाओं ने जातीय तनाव को और भड़का दिया तथा ‘राष्ट्र’ की कृत्रिम एकता को उजागर किया।

लॉस्की के तर्क को सरल रूप में कहें तो, संप्रभुता का मिथक पूँजीवादी व्यवस्था के हित में कार्य करता है। यह श्रमिकों को राष्ट्रीय झंडों के नाम पर आंतरिक रूप से एकजुट करता है, परन्तु उन्हें वैश्विक स्तर पर विभाजित कर देता है। इसका विकल्प

प्रस्तुत करते हुए, उन्होंने ''कार्यात्मक और क्षेत्रीय संघों'' जैसे मजदूर गिल्ड, औद्योगिक परिषदें, सांस्कृतिक महासंघ को सत्ता का वास्तविक आधार बनाने की बात कही, जिससे लोकतंत्र सामाजिक रूप से जैविक रूप में विकसित हो सके। उनकी यह दृष्टि जॉन डेवी के प्रैग्मैटिज्म से सामंजस्य रखती थी, जिसे लॉस्की ''प्रयोगात्मक (experimentalist)'' मानते थे, अर्थात ऐसे सुधार जो कठोर विचारधारात्मक ढाँचों से मुक्त हों और निरन्तर अनुभव पर आधारित हों। यद्यपि उनके विचार जी.डी.एच. कोल के गिल्ड समाजवाद से मिलते–जुलते थे, लेकिन लॉस्की का बहुलतावाद राष्ट्र–राज्यों से परे जाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक विस्तृत था, ताकि आर्थिक प्रतिस्पर्धा और व्यापार युद्धों को सीमित किया जा सके।

आलोचकों ने हालांकि एक वैचारिक समस्या की ओर संकेत किया, यदि विभिन्न संगठन अपने–अपने क्षेत्रों में संप्रभु हों, तो आपसी टकराव की स्थिति में समाधान कैसे होगा? लॉस्की ने इसके उत्तर में ''नैतिक बहुलतावाद'' का सिद्धांत दिया– जिसके अनुसार सत्ता का स्रोत बल या दमन नहीं, बल्कि सहमति और संवाद होना चाहिए। यह सोच आधुनिक विचारकों जैसे हैबरमास के ''विमर्शात्मक नैतिकता (discourse ethics)'' की पूर्वसूचना देती प्रतीत होती है। उनकी कृति | Grammar of Politics (1925) इसी मोड़ को दर्शाती है, जहाँ वे संप्रभुता की आलोचना बनाए रखते हैं, लेकिन एक ऐसे ''सक्षम लोकतांत्रिक राज्य'' का समर्थन करते हैं, जो विभिन्न हितों के बीच संतुलन और समन्वय स्थापित कर सके। यह परिवर्तन ब्रिटिश लेबर पार्टी के उभार और LSE में लॉस्की की भूमिका से भी जुड़ा था, जहाँ उन्होंने सी.बी. मैकफर्सन जैसे विद्यार्थियों को राज्य–समाज सम्बन्ध की विश्लेषणात्मक दिशा दी।

अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में, लॉस्कीका बहुलतावाद प्रारम्भ में राष्ट्र संघ (League of Nations) के प्रति आशावादी था। वे इसे अधिराष्ट्रीयवाद (supranationalism) की ओर एक ''महत्त्वपूर्ण कदम'' मानते थे, जहाँ राष्ट्र अपनी संकीर्ण आवाजों को सामूहिक तर्क के आगे रख सकें। लेकिन 1926 में जिनेवा यात्रा के दौरान उनका भ्रम टूटने लगा। जिमर्न के आदर्शवादी बचाव को वे अव्यावहारिक समझने लगे; उनके अनुसार राष्ट्र संघ में निर्णय लागू करने का ''साहस'' नहीं था, वह महाशक्तियों को प्राथमिकता देता था और कमजोर देशों की

International Journal in Management and Social Science
Volume 13 Issue 12, Dec 2025 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

अनदेखी करता था। Nationalism and the Future of Civilization (1932) जैसे व्याख्यानों में उन्होंने संप्रभुता को ''विनाशकारी'' बताते हुए सुरक्षा और शांति के लिए ''विश्व–नागरिकता'' आवश्यक बताई।

इस आलोचना का विस्तार करते हुए, लॉस्की का बहुलतावाद कार्यात्मकतावादी अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धांत (functionalism) की पूर्व सूचना देता है, जैसा बाद में डेविड माइट्रानी ने प्रतिपादित किया, जहाँ तकनीकी और आर्थिक सहयोग राजनीतिक संघर्षों से अधिक प्रभावशाली माना जाता है। वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था में, टोक्यो की नीतियाँ न्यूयॉर्क के श्रमिकों को प्रभावित करती हैं। ऐसे में सीमित राष्ट्रीय संप्रभुता अपर्याप्त हो जाती है और ''साझा संप्रभुता'' आवश्यक प्रतीत होती है। लेकिन लॉस्की ने चेतावनी दी कि आर्थिक ढाँचे में मौलिक परिवर्तन के बिना यह साझेदारी एक भ्रम होगी। पूँजीवाद की अराजकता वास्तविक परस्पर निर्भरता को सम्भव नहीं बनने देती।

इस बहुलतावादी चरण की महत्ता इसी में है कि उसने संप्रभुता की पवित्रता को चुनौती दी एक विषय जो बाद के उपनिवेशोत्तर अध्ययनों में पुनर्जीवित हुआ। आज यूरोपीय संघ के संकटों, WTO गतिरोधों, और वैश्विक शासन के विमर्श में लॉस्की की "विकेन्द्रीकरण और प्रयोगशील लोकतंत्र" की अवधारणा समकालीन समस्याओं के समाधान की दिशा में सशक्त ढाँचा प्रदान करती है।

राज्य हस्तक्षेप और अंतरराष्ट्रीयतावाद की ओर विचारों का विकास

1920–1930 के दशक लॉस्की की बौद्धिक परिपक्वता का काल थे। ब्रिटेन की जनरल स्ट्राइक (1926) और ग्रेट डिप्रेशन जैसी घटनाओं ने उन्हें बहुलतावाद (pluralism) से आगे ले जाकर "संशोधित राज्यवाद" (qualified statism) की ओर मोड़ा। । Grammar of Politics में उन्होंने लोकतांत्रिक राज्य को एक ''सक्षमकर्ता (enabler)'' के रूप में प्रस्तुत किया, जो संसाधनों के पुनर्वितरण के माध्यम से सामाजिक संगठनों को सशक्त बनाता है। इस प्रकार लॉस्की ने बहुलतावाद और समाजवाद में सामंजस्य स्थापित किया। राज्य बाजार की विफलताओं को नियंत्रित करने में सक्रिय हस्तक्षेप करे, लेकिन सामाजिक विविधता को कुचलने के बजाय उसे संरक्षित रखे।

वैश्विक स्तर पर भी लॉस्कीने इस सिद्धांत को विस्तारित किया। उनके अनुसार युद्धों और तकनीकी प्रगति ने दुनिया को ''परस्पर निर्भरता की एकता'' में बाँध दिया था, इसलिए भविष्य की स्थिरता के लिए ऐसे अंतर्राष्ट्रीय शासन की आवश्यकता थी, जहाँ ''अलग–अलग संप्रभुताएँ'' अंततः समाप्त हो जाएँ।

राष्ट्र संघ (League of Nations) के प्रति लॉस्की का दृष्टिकोण बदलता रहा। प्रारम्भ में वे इसे सिद्धांतों पर आधारित कार्रवाई की ''आरक्षित शक्ति'' के रूप में देखते थे, लेकिन 1926 के बाद वे तीव्र आलोचक बन गए। कमजोर देशों को एकीकृत करने और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय को वास्तविक अधिकार देने में असमर्थता ने राष्ट्र संघ की सीमाओं को उजागर किया। इस संदर्भ में लॉस्की जिमर्न के आदर्शवाद से सहानुभूति रखते थे, परन्तु उसकी अति–आशावादी दृष्टि को अस्वीकार करते हुए उन्होंने अधिक न्यायसंगत अंतर्राष्ट्रीय संरचना की आवश्यकता पर बल दिया, जो बाद में संयुक्त राष्ट्र (UN) सुधार प्रस्तावों की पूर्वध्वनि बन गया।

1931 में लेबर पार्टी के पतन ने लॉस्की के विचारों को और अधिक उग्र बनाया। संसदीय मार्ग से समाजवाद प्राप्त करने पर प्रश्न उठाते हुए उन्होंने मार्क्सवाद के प्रति सहानुभूति व्यक्त की। सोवियत प्रयोगों की प्रशंसा करते हुए भी उन्होंने स्टालिनवाद की आलोचना की– इसे ''संक्रमणकालीन विचलन'' बताया। Democracy in Crisis (1933) में उन्होंने फांसीवाद के उदय को पूँजीवाद की ''विपत्ति–जनित प्रतिक्रिया'' कहा, जिसमें

International Journal in Management and Social Science
Volume 13 Issue 12, Dec 2025 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

आर्थिक संकट के समय बुर्जुआ लोकतंत्र क्षीण हो जाता है। इसी दिशा को आगे बढ़ाते हुए The Rise of European Liberalism (1936) में उन्होंने उदारवाद की औपनिवेशिक वर्चस्व से मिलीभगत को ऐतिहासिक ढांचे में समझाया और समाजवादी पुनर्गठन का आह्वान किया।

लॉस्की का 1933 का निबंध "The Economic Foundations of Peace" इन विचारों का केंद्रीय रूप था। उनके अनुसार स्थायी शांति संभव ही नहीं, जब तक पूँजीवाद से आगे न बढ़ा जाए, क्योंकि बाजार आधारित तर्क हमेशा प्रतिस्पर्धा और प्रभुत्व को जन्म देता है। राष्ट्र संघ का उद्देश्य श्रेष्ठ था, परन्तु संप्रभु राष्ट्रों के स्वार्थों के सामने वह टिक नहीं सका। समाजवाद, लॉस्की के अनुसार, ऐसे अंतरराष्ट्रीय सहयोग की अनुमति देता है जिसमें राज्य उद्देश्यों का संरेखण श्रमिक वर्ग के हितों से किया जा सके, भले ही राष्ट्रीय इकाइयाँ पूरी तरह समाप्त न हों।

Norman Angell और H-N- Brailsford के साथ हुई बहस, जो Does Capitalism Cause War? (1935) में संकलित है, ने लॉस्की की सोच को और पैना किया। ऐंजेल के इस दावे– ‘‘युद्ध लाभ का सौदा नहीं है’’ के विपरीत, लॉस्की ने कहा कि पूँजीवाद का विस्तारवादी स्वभाव अनिवार्य रूप से युद्ध की ओर ले जाता है। इसलिए शांति केवल वर्गीय पुनर्गठन और संप्रभुता के आक्रामक चरित्र के उन्मूलन से हासिल की जा सकती है।

इस विकास ने लॉस्की को उदारवाद और मार्क्सवाद के बीच सेतु के रूप में स्थापित किया। वे ब्रिटेन में ‘‘शांतिपूर्ण परिवर्तन’’ के समर्थक थे, परन्तु रूसी क्रांति की हिंसा का ऐतिहासिक संदर्भ में समर्थन भी करते थे। उनकी सोशलिस्ट लीग (1932) और लेफ्ट बुक क्लब (1936) की गतिविधियाँ लेबर पार्टी को अधिक क्रांतिकारी दिशा में ले जाने के प्रयास का हिस्सा थीं, जिसमें घरेलू सामाजिक न्याय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फांसीवाद–विरोधी संघर्ष; दोनों सम्मिलित थे।

पुनर्दृष्टि में, लॉस्की का अंतरयुद्ध काल का यह वैचारिक मोड़ पूँजीवाद और भू–राजनीति के पारस्परिक सम्बन्धों को गहराई से उजागर करता है। एक दृष्टि जिसने आगे चलकर आंद्रे गुंडर फ्रैंक जैसे निर्भरता सिद्धांतकारों को प्रभावित किया।

International Journal in Management and Social Science
Volume 13 Issue 12, Dec 2025 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

कट्टरता की ओर झुकाव और समाजवादी अंतर्राष्ट्रीयतावाद की अनिवार्यता

1930 के दशक के मध्य तक आते–आते लॉस्की का वैचारिक कट्टरपन अपने चरम पर पहुँच चुका था। उनके अनुसार फांसीवाद लोकतंत्र के विरुद्ध पूँजीवाद का सबसे सुविधाजनक हथियार था। The State in Theory and Practice (1935) में उन्होंने तर्क दिया कि राज्य मूलतः प्रभुत्वशाली वर्गों के हितों की सेवा करता है, और जब तक वर्गीय ढाँचे में परिवर्तन न हो, तब तक युद्ध ''लगभग अनिवार्य'' हैं। उनके लिए समाजवाद ही ''शांति की वास्तविक शर्तों'' की स्थापना का मार्ग था– ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसके माध्यम से तार्किक और न्यायसंगत अंतरराष्ट्रीय सहयोग सम्भव हो।

द्वितीय विश्व युद्ध ने लॉस्की के अनेक अनुमानों की पुष्टि की। उन्होंने रूजवेल्ट के "Four Freedoms" का समर्थन किया और माना कि ये स्वतंत्रताएँ केवल योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था में ही साकार की जा सकती हैं, जहाँ अभाव का अंत हो। Reflections on the Revolution of Our Time (1943) में उन्होंने वैश्विक माँग में विस्तार की आवश्यकता पर बल दिया और यह आलोचना की किन्यू डील संवैधानिक सीमाओं के कारण पूँजीवाद को मूल रूप से परिवर्तित नहीं कर सकी। रूजवेल्ट की शक्तिशाली राष्ट्रपति प्रणाली की प्रशंसा करते हुए भी लॉस्की ने आग्रह किया किपूँजी पर नियंत्रण के लिए और गहरे सुधारआवश्यक हैं।

संस्थागत ढाँचे के स्तर पर लॉस्की ने पारंपरिक संघवाद (federalism) को अस्वीकार करते हुए समाजवादी आधारों पर ''संप्रभुताओं के सम्मिलन'' की अवधारणा प्रस्तुत की– क्षेत्रीय समूहों के बीच बड़े पैमाने पर सहयोग, जो किसी विश्व निकाय के भीतर संचालित हों, और जो राष्ट्र संघ से कहीं अधिक विकसित तंत्र का रूप लें। Where Do We Go from Here?(1940) में उन्होंने चेतावनी दी कि यदि युद्ध से पहले ही राजनीतिक–संस्थागत सुधार न किए गए, तो अंतरयुद्ध काल की अराजकता लौट आएगी, किंतु लेबर पार्टी ने सरकारी गठबंधन को अस्थिर करने के भय से उनकी सिफारिशें खारिज कर दीं।

1945 के बाद लॉस्की की निराशा और बढ़ गई। उन पर ''हिंसक क्रांति को बढ़ावा देने'' का आरोप लगने और मानहानि मुकदमे के दौरान भारी सार्वजनिक आलोचना ने उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाया, बावजूद इसके कि अंततः उन्हें न्याय मिला। 1946

में सोवियत संघ की यात्रा ने भी रेड–बेटिंग (कम्युनिस्ट विरोधी उन्माद) को और बढ़ावा दिया। संयुक्त राष्ट्र की वे तीखी आलोचना करते थे, क्योंकि उनके अनुसार यह शक्ति संतुलन को बनाए रखने के बजाय उसे स्थायी बनाता है; इसके स्थान पर उन्होंने ऐसी ''वास्तविक विश्व सरकार'' की माँग की, जो जन–प्रतिनिधि संसदों द्वारा संचालित हो, न कि अभिजात्य वीटो शक्तियों से नियंत्रित।

The American Democracy (1948) में लॉस्की ने शीत युद्ध को दो महाशक्तियों के बीच ''परस्पर संदेहों से प्रेरित प्रतिद्वंद्विता'' के रूप में देखा और लेबर पार्टी के लिए गुट–निरपेक्ष रुखकी वकालत की। अपनी अंतिम और अपूर्ण पुस्तक The Dilemma of Our Times (1950) में उन्होंने पुनः चेताया कि परमाणु खतरे और आर्थिक अभाव लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओं को सबसे गहराई से चुनौती देते हैं।

लॉस्की की यह कट्टर सोच– आशावाद और निराशा का सम्मिश्रण– उपनिवेशोत्तर स्वतंत्रता आंदोलनों पर भी प्रभावी पड़ी, विशेष रूप से भारत के प्रति उनके समर्थन में यह स्पष्ट दिखाई देता है।

युद्धकालीन दृष्टियाँ, युद्धोत्तर मोहभंग और स्थायी विरासत

युद्ध के दौरान लिखे गए ग्रंथ जैसे The Old World and the New Society (1941) में लॉस्की ने एक ''नई समाज रचना'' की कल्पना की थी, जिसमें योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था, समानता और वैश्विक स्तर पर फोर फ्रीडम्स (Four Freedoms) को लागू करने की वकालत की गई। उन्होंने 1945–1950 के बीच ब्रिटेन में लेबर सरकार द्वारा लागू सुधारों NHS की स्थापना, राष्ट्रीयकरण नीतियाँ और कल्याणकारी योजनाएँ– का समर्थन किया, लेकिन साथ ही चेताया कि पूँजी और समाजवाद के बीच संतुलन एक ''धार वाली तलवार;; पर चलने जैसा है।

युद्ध के बाद,संयुक्त राष्ट्र (UN) के प्रति लॉस्की की आलोचना तीव्र होती गई। उनके अनुसार यह संस्था ''सार्वभौमिक न्याय'' के बजाय शासक वर्गों की ''संप्रभु इच्छाओं'' पर निर्भर थी, जिसके कारण असमानताएँ और सत्ता संतुलन की विसंगतियाँ बनी रहीं। शीत युद्ध के दौर में, लॉस्की ने माना कि प्रचार युद्ध और साम्राज्यवादी हितों ने विश्व को और

अधिक विभाजित कर दिया, इसलिए उन्होंने संतुलित और विवेकपूर्ण कूटनीति की सलाह दी।

1950 में लॉस्की की मृत्यु ने उनके प्रभाव को अचानक रोक दिया। इसके बाद पॉजिटिविज्म और मैकार्थीवाद के बढ़ते प्रभाव ने उनकी लोकप्रियता को कम कर दिया। 1955 में डीन ने उन्हें ''असंगत विद्वान'' कहकर आलोचना की और क्रॉसलैंड ने उनकी सोच को पुरातन घोषित किया। इसके बावजूद राल्फ मिलिबैंड, जॉन सैविल और न्यू लेफ्ट के अनेक विद्वानों पर लॉस्की का गहरा प्रभाव देखा गया वे उनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शिष्य थे।

आज, लॉस्की के विचारों में पुनरुत्थान की संभावनाएँ दिखाई देती हैं। संप्रभुता पर उनकी आलोचना जिसे आधुनिक शोध ''वेस्टफेलियर (Westfailure) संकट'' के रूप में पहचानता है आज के वैश्वीकरण, पूंजीवाद की असमानताओं और सामाजिक न्याय की बहसों से गहराई से जुड़ती है। लॉस्की का तर्क था कि वैश्विक समानता और शांति के लिए संप्रभु राज्य व्यवस्था की समाजवादी पुनर्संरचना अपरिहार्य है।

निष्कर्ष

हेरोल्ड लॉस्की की बौद्धिक यात्रा प्रारंभिक बहुलतावादी आशावाद से समाजवादी चेतावनी देने वाले चिंतक तक बीसवीं सदी के राजनीतिक संकट सिद्धांत के नैतिक और वैचारिक मूल को उजागर करती है। लॉस्की ने लगातार यह प्रश्न उठाया किक्या पूँजीवाद मानव गरिमा और लोकतंत्र के साथ सह–अस्तित्व में रह सकता है? क्या सार्वभौमिक संप्रभुता वैश्विक परस्पर निर्भरता के युग में शांति सुनिश्चित कर सकती है? और क्या राज्य शासन केवल प्रभुत्व का विस्तार रहेगा या सामाजिक समानता का साधन बन सकता है?

इन प्रश्नों की प्रासंगिकता आज भी कम नहीं हुई है। वैश्वीकरण, आर्थिक असमानताओं, सत्ता संतुलन, युद्ध की राजनीति और लोकतंत्रीकरण की सीमाओं पर समकालीन बहसें लॉस्की की ही चिंताओं की पुनरावृत्ति हैं। लॉस्की का विचार हमें केवल यथार्थवाद के निंदक दृष्टिकोण को स्वीकार करने की बजाय, संभावनाओं की राजनीति के द्वार खोलने का आग्रह करता है। ऐसी राजनीति जहाँ लोकतंत्र केवल राष्ट्रीय सीमाओं

तक सीमित न रहे, बल्कि वैश्विक नागरिकता और सामाजिक न्याय की दिशा में विस्तारित हो।

लॉस्की की विरासत यह संदेश देती है कि यदि बाजार मानवता के लिए नहीं, तो मानवता बाजार के लिए क्यों रहे? उनका दर्शन हमें यह याद दिलाता है कि विश्व व्यवस्था तभी टिकाऊ हो सकती है जब अर्थव्यवस्था, शासन और संप्रभुता को शांति, समानता और मानव कल्याण के सिद्धांतों के अधीन पुर्नसंगठित किया जाए।

संदर्भ–

- Deane, H. A. (1955). The political ideas of Harold J. Laski. Columbia University Press.Laski, H. J. (1917). Studies in the problem of sovereignty. Yale University Press.
- Laski, H. J. (1921). Authority in the modern state. Yale University Press.
- Laski, H. J. (1925). A grammar of politics. George Allen & Unwin.
- Laski, H. J. (1930). Liberty in the modern state. George Allen & Unwin.
- Laski, H. J. (1933). Democracy in crisis. Viking Press.
- Laski, H. J. (1935). The state in theory and practice. Viking Press.
- Eckersley, R. (2022). Liberalism, pluralism and the sphere division in Harold Laski. Theoria: A Journal of Social and Political Theory, 69(170), 1–25.
- Encyclopædia Britannica. (n.d.). Harold Joseph Laski. In Encyclopædia Britannica. Retrieved December 7, 2025, from https://www.britannica.com/biography/Harold-Joseph-Laski
- Jupp, P. (2018). Harold Laski's international functionalism: A socialist challenge to the state system. The International History Review, 40(3), 473–492. https://doi.org/10.1080/07075332.2018.1425892

- Lamb, P. (1999). Harold Laski (1893–1950): Political theorist of a world in crisis. Review of International Studies, 25(3), 329–342. https://doi.org/10.1017/S026021050000848X
- Miliband, R. (1999). Harold Laski: An exemplary public intellectual. New Left Review, I(200), 5–23.
- O'Sullivan, N. (2018). A liberal ghost? The left, liberal democracy and the legacy of Harold Laski's teaching. The International History Review, 40(5), 1045–1062. https://doi.org/10.1080/03086534.2018.1519245
- Tully, J. (2005). Harold Laski on unsettling sovereignty, rediscovering democracy. Political Research Quarterly, 58(4), 613–626. https://doi.org/10.1177/106591290505800413
- Wilde, N. (1922). [Review of the book The foundations of sovereignty and other essays, by H. J. Laski]. International Journal of Ethics, 32(4), 442.
- Zee, F. R. R. van der. (2024). Technology, conscience, and the political: Harold Laski's pluralism in Carl Schmitt's terms. Constellations. Advance online publication. https://doi.org/10.1111/1467-8675.12789